



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (10-11-18)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा हदों से पार रह सबको अपनेपन की महसूसता कराने वाले अनुभवी मूर्त, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश-विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्मन मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वन्दरफुल हमारा मीठा बाबा और वन्दरफुल उनकी यह प्रभू लीला... कैसे अपने अव्यक्त स्वरूप द्वारा सभी बच्चों की पालना करते, उड़ती कला में उड़ाते रहते हैं। ड्रामा की इस परिवर्तित सीन में भी सभी बड़े उमंग-उत्साह से मधुबन वरदान भूमि में आकर खूब रिफ्रेश हो रहे हैं। मीठा बाबा सूक्ष्म रूप में अपने बच्चों को हर प्रकार से भरपूर कर देता है। अभी तक हमारी मीठी सखी गुल्जार दादी मुम्बई में ही हैं। हम सबका यही शुभ संकल्प है कि दादी जल्दी से जल्दी अपने मधुबन घर में पहुंचकर सबको साकार रूप में अव्यक्त मिलन की अनुभूति करायें।

दिलाराम बाबा ने तो हम सबकी दिल ले ही ली है। दिलाराम बाबा दिल में बैठकर, अपनी सेवा कराने के लिए सदा साथ रहता है। ड्रामा में जो भी हो रहा है, जो हुआ है सब अच्छे से अच्छा है, जो होगा वह भी बहुत अच्छा होगा क्योंकि सुख, शान्ति, प्रेम, आनंद और नम्रता भाव से सभी भरपूर हैं। हम सबके दिल से यही गीत बार-बार निकलता है - बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है। यह सुख के वायब्रेशन्स ही खुशी दिलाते हैं। यह साधारण खुशी नहीं है, अतिन्द्रिय सुख वाली खुशी है जिसमें कर्मेन्द्रियां इधर उधर नहीं देखती हैं, सिवाए बाबा के और कहीं देखने का जी नहीं चाहता। जब मन भटकता है तब दिल बिचारी दुःखी होती है। मन को चाहिए शान्ति और दिल को खुशी मिल जाए तो चेहरा कितना अच्छा हो जाता है। तो मैं हमेशा भगवान का शुक्रिया मानती हूँ कि उसने मेरी दिल को खुश कर दिया है। दुःख क्या होता है, उसका नाम-निशान भी नहीं है। मन शान्त है, बुद्धि स्थिरियम, अचल अडोल है। समय, संकल्प और श्वास सब सफल हो रहा है। सदा यही ध्यान रहता है कि अब कुछ भी निष्फल न जाये। मन वाणी कर्म से सदा अच्छे से अच्छी सेवा होती रहे। बाबा को जो कराना है वही हो तो यही है सफल होना।

हम सब बाबा के मीठे प्यारे बच्चे हैं, मीठे हैं तो कभी कडुवा बोल नहीं सकते। अगर कोई कडुवा शब्द निकल गया तो अन्दर महसूस होता है कि यह मैंने रांग किया। अब अपनी अचल अडोल एकरस स्थिति में रहना, यह मेरा शान है। हम अन्तर्मुखता से ही ऐसी स्थिति जमा सकते हैं। भले कोई भी कारण हो जाये, वह कारण चला जायेगा लेकिन स्थिति खराब न हो। अभी पूरा अटेन्शन रख, शान्त में रह बाबा की यादों में समाये रहना है। सदा यही स्मृति रहे कि हर कदम में मात पिता की दुआयें मिलती रहें। गीत है ना ले लो दुआयें माँ बाप की तो गठरी उतरे पाप की। सिर्फ सच्चे दिल से बाबा को याद करते हैं, श्रीमत पर पूरा चलते हैं तो पास्ट के विकर्म भी बाबा नाश कर देता है। बाबा बहुत मदद करता है, हिम्मते बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राजी, नियत साफ मुराद हांसिल।

संगमयुग पर भगवान की हमारे ऊपर दया दृष्टि है, दुआयें भी हैं। बाबा ऐसी शक्ति दे देता है, जो सेवा कराना चाहे अच्छी तरह सेवा हो जाती है। अच्छा - अभी तो आप सब अपने मधुबन बेहद घर में आने की तैयारियां कर रहे होंगे। सबकी तबियत ठीक होगी। सबको बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



“फुलस्टॉप लगाओ और फुल स्टॉक जमा करो”

1) क्वेश्चनमार्क मुश्किल है फुलस्टाप सहज है। उसमें एनर्जी वेस्ट है और फुलस्टाप में लाइफ ही बेस्ट हो जायेगी। अभी-अभी आवाज़ में आये, अभी-अभी आवाज़ से परे। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर हो। संकल्प शक्ति को जब चाहो तब विस्तार में लेकर आओ, जब चाहो तब विस्तार को फुलस्टाप में समा दो। स्टार्ट करने की और स्टॉप करने की दोनों ही शक्तियां समान रूप में हों तो सब प्रकार का स्टॉक जमा हो जायेगा।

2) फास्ट जाना है तो कोई भी छोटी बात को बड़ा नहीं बनाना। बड़े को छोटा बना दो। यह भी होता है क्या? यह क्वेश्चन नहीं। यह क्या हुआ, ऐसे भी होता है? इसके बजाए जो होता है कल्याणकारी है। क्वेश्चन खत्म होने चाहिए, फुलस्टाप। बुद्धि को इसमें ज्यादा नहीं चलाओ, नहीं तो एनर्जी वेस्ट चली जाती है और अपने को शक्तिशाली नहीं अनुभव करते। क्वेश्चन मार्क ज्यादा होते हैं।

3) सर्विस का उमंग-उत्साह बहुत अच्छा है। अभी थोड़ा बहुत जो माया के विघ्न देखते हो, यह भी नथिंग न्यू है, माया सिर्फ आपका पेपर लेने आती है, उससे घबराओ मत। खिलौना समझकर खेलो तो माया वार नहीं करेगी लेकिन आराम से विदाई लेकर सो जायेगी इसलिए ज्यादा नहीं सोचो यह क्या हुआ, हो गया फुलस्टाप लगाओ और आगे जाकर पदमगुणा जो कुछ रह गया वह भर लो। बढ़ते चलो और बढ़ाते चलो। बापदादा साथ है, माया की चाल चलने वाली नहीं है इसलिए घबराओ नहीं। खुशी में नाचो, गाओ।

4) अब तक जो हुआ उसको फुलस्टाप की बिन्दी लगाए, सदा साथ रहने के स्मृति की बिन्दी लगाओ। जैसे बड़े दिन वा खुशी के दिन पर विशेष सुहाग, भाग्य और बधाई की बिन्दी अर्थात् तिलक लगाते हैं। आप लोग भी विशेष याद की भट्टी के दिन खास बिन्दी लगाते हो यह दृढ़ संकल्प की निशानी है। ऐसे ही दृढ़ संकल्प द्वारा फुलस्टाप की बिन्दी लगाओ, दूसरी समर्थ स्वरूप की बिन्दी लगाओ, तो सर्व शक्तियों का स्टॉक जमा हो जायेगा।

5) जिन बातों को दुनिया के मानव मुश्किल कहते वह मुश्किल बातें आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए सहज नहीं लेकिन अति सहज हैं क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान हो। दुनिया के मानव तो समझते यह कैसे होगा! इसी उलझन में बुद्धि द्वारा, शरीर द्वारा भटकते रहते हैं और आप क्या कहेंगे? कैसे होगा – यह संकल्प कभी आ सकता है? कैसे अर्थात् क्वेश्चन मार्क। तो कैसे के बजाए फिर से यही आवाज निकलता कि ऐसे होता है। ऐसे अर्थात्

फुलस्टाप। तो क्वेश्चन मार्क को बदलकर फुलस्टॉप लगा दो।

6) बाप भी बिन्दू, आप आत्मायें भी बिन्दू और ड्रामा का ज्ञान धारण करने के लिए जो हुआ – फिनिश अर्थात् फुलस्टाप, बिन्दू लगा दिया। परम आत्मा, आत्मा और यह प्रकृति का खेल अर्थात् ड्रामा तीनों का ज्ञान प्रैक्टिकल लाइफ में बिन्दू ही अनुभव करते हो ना इसलिए भक्ति में भी शिव की प्रतिमा के बीच बिन्दू का महत्व है।

7) क्वेश्चन को फुलस्टाप के रूप में परिवर्तन करना अर्थात् अपने को सभी सब्जेक्ट में फुल करना। यह है फुलस्टाप। कोई भी परिस्थिति के समय पर क्या होगा, यह क्वेश्चन नहीं उठना चाहिए लेकिन क्या करना है, मेरा कर्तव्य ऐसे समय पर क्या है, उस सेवा में लग जाओ। जैसे आग बुझाने वाले आग को बुझाने में लग जाते, क्वेश्चन नहीं करते कि यह क्या हुआ। ऐसे आप रूहानी सेवाधारियों का कर्तव्य है अपनी रूहानी सेवा में लग जाना।

8) आप मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों के पास इतनी शक्ति हो जो स्टॉप कहा और संकल्प स्टॉप हो जाए, फुल ब्रेक लगे, ढीली ब्रेक नहीं। अगर ब्रेक ढीली होती है तो लगाते यहाँ हैं और लगेगी कहाँ? तो ब्रेक पावरफुल हो। कन्ट्रोलिंग पावर हो। चेक करो – कितने समय के बाद ब्रेक लगता है? 5 मिनट के बाद या 10 मिनट के बाद। फुलस्टाप तो सेकण्ड में लगना चाहिए। अगर एक सेकण्ड के सिवाए ज्यादा समय लग जाता है तो समाने की शक्ति कमजोर है। पावरफुल ब्रेक का काम है जहाँ लगाओ वहाँ लगे। सेकण्ड भी देर से लगी तो एक्सीडेंट हो जायेगा।

9) कोई नई बात होती है तो आश्चर्य से निकलता है – यह क्या, ऐसा होता है क्या! लेकिन नथिंग न्यू है तो “क्या” और “क्यों” का क्वेश्चन नहीं, फुलस्टॉप आ जाता है। तो फुलस्टॉप वाले हो या क्वेश्चन वाले हो या क्वेश्चन मार्क वाले हो? सबसे सहज बिन्दी होती है। बच्चों को भी हाथ में पेंसिल देंगे तो पहले बिन्दी लगायेगा। तो फुलस्टॉप बिन्दी है। जो फुलस्टाप देना जानते हैं वह फुल पास होते हैं।

10) दुनिया में लोग रिचेस्ट बनने के लिए कितनी मेहनत करते हैं और आप कितना सहज मालामाल बनते जाते हो। सिर्फ छोटी सी बिन्दी लगानी है बस। बिन्दी लगाई, कमाई हुई। आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा का फुलस्टाप लगाना, वह भी बिन्दी है। जैसे एक के आगे बिन्दी लगाओ तो 10, दो बिन्दी लगाओ, तीन बिन्दी लगाओ, चार बिन्दी लगाओ, बढ़ता जाता है। तो आपका भी साधन कितना सहज है! “मैं आत्मा हूँ” - यह स्मृति की

बिन्दी लगाना अर्थात् खजाना जमा होना। फिर “बाप” बिन्दी लगाओ और खजाना जमा। कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में ड्रामा का फुलस्टाप लगाओ, बीती को फुलस्टाप लगा दो तो खजाना बढ़ जाता है।

11) अभी-अभी कार्य में आये, अभी-अभी कार्य से न्यारे, साकारी सो निराकारी स्थिति में स्थित हो जाएं। कोई समस्या भी आती है तो एक सेकण्ड में साक्षी दृष्टा बन, समस्या को एक साइडसीन समझ, तूफान को एक तोहफा समझ उसको पार करो। कोई भी दृश्य देखते सुनते क्वेश्चन मार्क नहीं, यह क्यों हुआ, यह कैसे हुआ? हो गया, फुलस्टाप। आप अपने फुल शक्तिशाली स्टेज पर स्थित हो जाओ तो समस्या नीचे रह जायेगी, आप ऊंची स्टेज से समस्या के साइडसीन को देखते रहेंगे।

12) ड्रामा में जो भी कर्म किया, बीत गया, उसको फुलस्टाप लगाओ। सिर्फ तीन बिन्दू सदा याद रखो। देखो, आजकल की दुनिया में सबसे ज्यादा महत्व पैसे का है। माँ बाप भी कुछ नहीं हैं, पैसा ही सब कुछ है। उसमें भी बिन्दी की कमाल है और श्रेष्ठ आत्मा बनने में भी बिन्दी की कमाल है और करनकरावनहार भी बिन्दू है। तो बिन्दू याद रखो और विस्तार में नहीं जाओ। बिन्दू बन बिन्दू को याद करो और बिन्दू लगाओ, बस। यह है पुरुषार्थ।

13) बापदादा ने सुनाया है कि लास्ट टाइम की लास्ट एक घड़ी होगी जिसमें फुलस्टाप लगाना पड़ेगा। लेकिन अभी तक दूसरों की बातें याद करते, यह क्यों होता, यह क्या होता, इसमें आश्चर्य की मात्रा लग जाती है। अगर फुलस्टाप लगाने की आदत नहीं होगी तो अन्त मते सो गति श्रेष्ठ नहीं होगी। बापदादा ने अब तक

अलबेलेपन के बहुत खेल देख लिये, अभी सेकण्ड में फुलस्टाप का खेल दिखाना।

14) चारों ओर अभी दो शब्द की लात-तात लगाओ - एक फुलस्टाप और दूसरा सम्पूर्ण पवित्रता सारे ब्राह्मण परिवार में फैलानी है। जो कमजोर हैं उनको भी सहयोग देके आगे बढ़ाओ। यह बढ़ा पुण्य है। छोड़ नहीं दो, यह तो है ही ऐसा, यह तो बदलना ही नहीं है, यह श्राप नहीं दो, पुण्य का काम करो। बदलके दिखायेंगे, बदलना ही है। उनकी उम्मीदें बढ़ाओ, गिरे हुए को गिराओ नहीं, सहारा दो, शक्ति दो।

15) अनेक भावों से अनेक आत्मायें आती हैं लेकिन आप की तरफ से शुभ भावना की बातें ही ले जाएं। भावना शुभ हो, एक भावना, एक कामना एक की ही लगन में निर्विघ्न - व्यर्थ बातों का स्टॉक खत्म और खुशी की बातों का स्टॉक जमा हो - खुशी में झूलने वाली आत्मायें सबको नज़र आयें। हर बोल में रुहानियत हो - रुहानियत के शब्द बहुत मीठे होते हैं।

16) जितना आगे बढ़ेंगे, सेवा के योग्य समय होता जायेगा लेकिन उस समय परिस्थितियाँ भी अनेक होंगी। उन परिस्थितियों में सेवा करने के लिए अभी से फुलस्टाप लगाने का अभ्यास चाहिए। उस समय आना जाना भी मुश्किल होगा। मनसा द्वारा ही आगे बढ़ाने की सेवा करनी पड़ेगी। वह देने का समय होगा, स्वयं में भरने का नहीं इसलिए पहले से ही अपना स्टॉक चेक करो कि सर्वशक्तियों का स्टॉक भर लिया है। सर्वशक्तियाँ, सर्वगुण सर्व ज्ञान के खजाने, याद की शक्ति से सदा भरपूर करो। किसी भी चीज़ की कमी नहीं चाहिए।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

31-10-14

मधुबन

“अब ऐसा कोई प्रोग्राम बनाओ जो हमारा बाबा कौन है, कैसा है, उसका प्रबन्धकी साक्षात्कार ही जाए” (दादी जानकी)

अब लगता है कि लम्बा कुछ सुनाने की जरूरत नहीं है इसलिए न कुछ बोलूँ तो भी अच्छा है और बोलूँ तो ऐसा बोलूँ जो भूले नहीं। हमको जीना है तो ऐसा, फिर इसी स्थिति में मरना है। जब तक मरूँ ना तो ऐसी स्थिति हो। इसके लिए हर एक बाबा के अनन्य बन जायें, उन जैसा अन्य कोई नहीं। तो मेरी भावना है, आप हर एक बाबा का परिचय मुख से भले नहीं दो। किसी को भी कोई प्रकार का दुःख हो ना, तो आपको देखकर चला जावे। दुःख करने की क्या बात है? ऐसे नहीं बोलो। तो जहाँ भी जायेंगी, जहाँ भी रहेंगी... मुझे कोई घर नहीं है, मेरा कोई स्टूडेंट नहीं है इसलिए बाबा ने मुझे अपने दिल में जगह दिया है, वहीं रहती हूँ।

अब अन्त मते सो गते बाबा के दिल में ही बैठे रहें। जब तक बाबा ने इस देह में रखा है, बाबा ने दिल में बिठाया है। मैंने बाबा को दिल में बिठाया है, बाबा ने मेरे को दिल में बिठाया है।

आजकल मैं रूमाल भी नहीं रख पाती हूँ, क्योंकि सम्भालना पड़ेगा इसलिए बहुत सिम्पल बनके ऐसा सैम्पुल बनें जहाँ भी जायें, जहाँ भी रहे तो कोई प्रॉब्लम नहीं है। जो वरी करता है वो हरी करता है, वो करी बनता है इसलिए न वरी, न हरी.. किसकी वरी? क्या चाहिए? न हरी... जल्दी की कोई बात नहीं है।

बाबा की कमाल है जो ऐसा संगठन बनाया है, संगठन को देख कितनी खुशी होती है। आप सबको देख दिल खुश हो गई।

तो सभी को मैं यह गिफ्ट देना चाहती हूँ, जिस गिफ्ट की लिफ्ट में बैठो और पहुँच जाओ। आजकल सीढ़ी चढ़ने में थोड़ा टाइम भी लगता है। हमारे सामने तो लिफ्ट खड़ी है सिर्फ बटन दबाओ पहुँच जाओ। इज़ी है ना क्योंकि समय बहुत थोड़ा है, कइयों को इसमें भी संशय होता है क्योंकि इतना साल हो गया, अभी तक विनाश आया नहीं है। हम कहती हैं अच्छा है विनाश नहीं आया है जब तक हम फरिश्ता नहीं बने हैं। हम फरिश्ता रूप बनेंगे तो विनाश इतने में हो जायेगा। साइंस वाले बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं, इसी के आधार से सारे विश्व को मैसेज मिल रहा है। बाकी यह कोई हमारी लाइफ के लिए नहीं है, सेवा के लिए है। साइलेंस वाले भी फरिश्ता बनने का काम तीव्रता से करें।

तो ऐसे मिलन मनाने में पहले खुशी मेरे को है या आपको है? क्योंकि खुशी जैसी खुराक नहीं, चिंता जैसा मर्ज नहीं। खुशी मजबूत बनाती है। काम बाबा का है तो बाबा ही चिंता करे ना, मेरा काम है खुश रहना, यह एक ही काम है और आपको खुशी देना, जो खुशी मुझे बाबा देता है। वन्दरफुल है यह भी नुमाशाम के समय योग करना, अमृतवेले तो ऐसे नहीं बैठ सकते हैं ना। दिल कहता है पर फिर यहाँ ही (कमरे में) बैठके करती हूँ। तबियत के कारण कभी मिस भी होता तो आप सबसे माफी मांगती हूँ। मैं राय देती हूँ कभी भी कोई अमृतवेला मिस नहीं करे। अमृतवेले की महिमा बहुत है, इतना ही फिर नुमाशाम के योग की भी है। जो यह नियम अनुसार चलते हैं जैसे ज्ञान, योग, धारणा, सेवा चार सब्जेक्ट नम्बरवार है।

ज्ञान कहता है देह और सम्बन्ध से न्यारे रह बाबा की याद में नेचुरल लाइफ हो। योग भी नेचुरल हो। धारणा ऐसी हो, जो बहुत मीठा हो जैसे बाबा हमेशा मुरली चलाने के पहले मीठे बच्चे कहता है। मीठे कौन होते हैं? जो कभी भी किसी के स्वभाव वश नहीं होते हैं। आज मैं यह आप लोगों को हाथ जोड़के कहती हूँ किसी के स्वभाव के वश होना माना बाबा जैसे मीठे बच्चे कहते हैं उनसे वंचित हो जाना है। तो हर एक अभी से संकल्प करे मीठा बनने का। तो ज्ञान योग धारणा में मुस्कराते रहो। वह सेवा दुआयें देने वाली है। बाबा का प्यार और परिवार की दुआयें मिलती हैं। बाबा देखता है बच्ची मीठी है, मेरा बच्चा मेरा नाम बाला करने के लिए अपनी घोट तो नशा चढ़े, जो बाबा सुनाता है वही मंथन करें। जितना वो मंथन करेंगे तो औरों को ऐसा बनने में इज़ी होगा। मुख से कुछ न बोलो। अभी ऐसा कोई प्रोग्राम बनाओ जो सारी दुनिया को बाबा कौन है, कैसा है, साक्षात्कार हो जाये। विचार करना आपस में। मतलब ऐसा प्रोग्राम बनाओ जो सबके दिल से निकलें मेरा बाबा, जो सर्व आत्माओं का पिता है। कलियुग को खत्म करके सतयुग लाने वाला बाबा आया है, ऐसा मेरा बाबा है।

सारा दिन मुरली पढ़ो सुनो, उसी पर चिंतन करो तो मुरली से जिसका जितना प्यार है। मुरली, मधुवन में भगवान सुनाता है। जो बाबा ने मुरली में बात सुनाई वो अमल में लाई? नहीं हुई हो तो आज से अभी से नज़रें ऐसी रखो। अच्छा।

दूसरा क्लास

“कभी किसी से झरमुई झगमुई न करना ही अपने ऊपर कृपा करना है”

यह अच्छा नहीं है... यह ख्याल आना माना की हुई कमाई खलास कर देना। मैं कहती हूँ जो करना है अब कर लें, जो किया है अच्छा किया है, बाकी और अच्छा क्या करना है। साइलेन्स में बैठे देख रही थी कि अभी हमें और क्या करना है। दुआ, दया, कृपा, आशीर्वाद इन चारों में बहुत अच्छे अनुभवी हैं। सारी लाइफ कभी किसी से झरमुई झगमुई नहीं की है, यह भगवान की बड़ी कृपा रही है। मैं कभी इन बातों में अपने को टायर्ड नहीं होने दिया है क्योंकि झरमुई झरमुई करने से विकर्म विनाश तो नहीं होंगे पर और ही विकर्मों का खाता बढ़ जायेगा इसलिए खबरदार, होशियार, सावधान रहना। तो अन्दर से मेरी भावना है कि अटेन्शन रखो, टेन्शन नहीं रखो। टेन्शन फ्री। मैं तो

टेन्शन नहीं कर सकती हूँ।

यह शरीर भले कितना भी तमाशा दिखाता है, शरीर समझता है इसको जितना सहन करना हो करे, मैं छोड़ूँगा नहीं। परन्तु आप लोगों के निमित्त इस टाइम मुझे कुछ नहीं है, पूरे दिनभर में कैसे रहती हूँ, कैसे बिताती हूँ फिर भी यह टाइम आपसे मिलता है। और आप खींचके आ जाते हो तो यह कमरा बहुत अच्छा है। ऐसा कमरा पूरे शान्तिवन में कहीं नहीं मिलेगा। हॉस्पिटल जैसी खटिया होते भी सहनशक्ति चाहिए इस पर सोने की। यहाँ बैठने में सब दर्द भूल गया, है नहीं कुछ। तो यह बाबा फिर मुझे कहता है मैं सर्वशक्तिवान हूँ, तू मेरी बेटी हो ना, मास्टर सर्वशक्तिवान हो ना, तो फिर क्यों कहती हो मैं सहन नहीं कर सकती हूँ। अष्ट

शक्तियों में से भी सहनशक्ति, समाने की, समेटने की यह तीन शक्तियां बहुत काम कर रही हैं। इन तीन शक्तियों के पीछे बाकी रही पाँच शक्तियां भी ऑटोमेटिक काम करती हैं। परन्तु मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, याद में ऐसी स्थिति होवे।

अन्तर्मुखी जो होगा वो सदैव सुखी होगा, अन्तर्मुखता से एकाग्रता अच्छी होती है, एकान्त अच्छी लगती है। एकान्त में बाबा से मिलना, बाबा से बातें करना बहुत अच्छा लगता है। बाबा कहता है जो बाबा के गुण हैं वो तुम्हारी सूरत से दिखाई देवें। किसी ने

लिखा है कि हमको अपने लाइफ का कदर होगा तो बाबा खुश होगा क्योंकि जैसा कर्म मैं करूँगा मुझे देख और करेंगे। सारी विश्व की सेवायें बाबा ने कैसे की, कराई हैं। सफल करना और सफल कराना यह सब्जेक्ट बड़ी अच्छी है। मेरे पास यह तन भी ऐसा है, मुझे नाटक दिखाता है फिर भी मैं अटकती नहीं हूँ।

तो अभी कोई रूखे नहीं, मीठे बनो, प्यारे बनो तो भगवान खुश हो। तुम भी खुश हम भी खुश। जी खुश तो जहान खुश। ओके।

तीसरा क्लास

“प्रेक्टिकल लाइफ में ऐसी अच्छी-अच्छी बातें हों जो हिम्मत, विश्वास, उमंग-उत्साह से अचल अडोल स्थिति बन जाये, न चलायमान हों, न डीलायमान हों”

ओम् शान्ति कहने में यह अंगुली बहुत काम करती है। यह जो चार और अंगुलियां हैं ना, छोटी है चाहे मोटी है पर सब काम की हैं। इतनी बड़ी सभा देख खींच होती है, रचता बाप की इतनी सुन्दर रचना बैठी है। सब आत्मायें हैं, सभी देहभान को छोड़ देह से न्यारे रहने के अनुभवी हैं। अभी सिर्फ हमें अपने समय, संकल्प और श्वास को सफल करने का काम करना है। वैसे बात करते तो श्वास चढ़ता है पर यहाँ बैठे श्वास, संकल्प, समय सब बहुत अच्छा सफल होता है।

आत्मा शान्त है तो कोई संकल्प नहीं है, तो जैसे बाबा सत् है, चैतन्य है तो हम बच्चों को भी शान्ति और सच्चाई के आधार से ऐसा आनंद स्वरूप बनाता है। कोई भी इधर उधर की बात यह कान सुनने के लिये नहीं हैं। मुख सुनाने के लिये नहीं है। सच्चाई और प्रेम के सिवाए अन्दर में और कुछ है ही नहीं। एक मिनट सभी अच्छा मुस्कुराओ, बाबा देखेगा और कहेगा बच्चे खुशी में इतना अच्छा मुस्कुरा रहे हैं तो कोई मुश्किलातें नहीं हैं, फ्री हैं। एक दो को देख, किसका भी कोई स्वभाव नहीं सब मेरे बाबा के बच्चे भाई भाई हैं। तो भाई भाई की दृष्टि एकदम आत्म-अभिमानि बनाती है। अभी सेवा में बहन भाई हैं, बहन भाई कितने मीठे हैं।

ड्रामा अनुसार सारा विश्व देखने को मिला है लेकिन इतना सुन्दर स्थान, ऐसा डायमण्ड हॉल विश्व में कहीं पर भी नहीं है। वन्दर तो यह है सफेद बालों में और ही सुन्दर लगते हैं क्योंकि बाबा का बनने से सुख मिला है इलाही। हमको देखकर, दिनप्रतिदिन इतनी वृद्धि को देखकर बाबा को भी कितनी खुशी होती है। पहले तो थोड़े थे, अभी बाबा के बच्चे लाखों हो गये हैं, वन्दर है।

जैसा संग वैसा रंग कमाल है उसकी। मुझे दिल होती है मैं भण्डारे में जाऊँ, कितना अच्छा भोजन सभी को मिल रहा है। जैसा अन्न वैसा मन सभी को यह फायदा हुआ है। इन दो बातों से समानता में आ गये हैं, बाबा सभी को ब्रह्माभोजन मुख में खिलाता है। बाबा ने एक बारी हाथ में ऐसे ग्राही (भोजन की) लेके कहा था बच्ची पहले तेरे को खिलाऊँ या बाबा को खिलाऊँ! मैंने कहा मैं बाबा को खिलाती हूँ, आप मेरे को खिलाओ। कितनी सुन्दर सीन होगी वो। बाबा ने अपने साथ भोजन पर बिठाया, ग्राही (भोजन की गिट्टी) हाथ में है, मैंने भी ग्राही बनाई, मैं पहले बाबा को खिलाती हूँ फिर बाबा ने मेरे को। तो कितना सुख मिला है, कितना प्यार मिला है।

मुख से क्या बोलना है वो बाबा मुरली में सिखाता है इसलिए और कुछ बोलना आता ही नहीं है। बाबा कैसा टीचर है! जैसा है बाप, फिर माँ और बाप दोनों रूपों से तुम मात-पिता हम बालक तेरे, तुम्हारी कृपा से सुख घनेरे, कोई न जाने तुम्हारा अन्त, ऊंचे ते ऊंचा भगवंत... यह भक्ति में हम गीत गाते थे। जिसका अन्त कोई नहीं जानता, कौन है कैसा है वो अन्तर बताया है। हमको पता है वो कौन है? वो स्मृति में रहने की दृष्टि ऐसी देता है जो हमारी वृत्ति में उसकी स्मृति है। उनकी स्मृति अडोल अचल बनाती है। कोई छोटी-मोटी बात में हिलना हम नहीं जानते। बातें आई सो गई, सोचने की जरूरत नहीं है। बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश... यह ऐसे ऐसे शब्द जो हैं ना। याद रखो तो कितनी मदद मिलती है। हिम्मते बच्चे मदद दे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राजी। ऐसी अच्छी-अच्छी बातें प्रैक्टिकल लाइफ

में हों तो हिम्मत, विश्वास, उमंग-उत्साह, अचल अडोल स्थिति, न चलायमान न डोलायमान ... ऐसी स्थिति स्वतः बन जायेगी।

तो अपनी अवस्था को अच्छा बनाने के लिए ऐसी मीठी मीठी बातें बाबा बहुत अच्छी सुनाता है। मेरे को तरस पड़ता है कोई पुरानी या पराई बात भूलते नहीं हैं। अरे, इसे छोड़ो ना। जो अवस्था अभी बनेगी अन्त मते सो गति वो होगी। औरों के लिए भी बाबा ने कहा है प्रेरणा देने लायक अवस्था बने। ऐसी अचल अडोल स्थिति हो जो किसी को ऐसा बनने के लिए खींच हो, प्रेरणा आये।

हमने अपने कमरे में पूर्वजों का फोटो रखा है। पूर्वज वो जो सबका स्नेही व शुभचिंतक हो। पूर्वजों का कैसा आपस में प्यार था, सदा ही एक दो को देख कितने खुश होते थे। बाबा तो भागीरथ है, हम फिर पदमापदम भाग्यशाली हैं, जहाँ कदम रखें वहाँ बाबा की याद में रहें और औरों को भी याद आ जाये। तो श्वास, संकल्प, समय सब सफल हों। जैसे मन बुद्धि संस्कार आत्मा में है। आत्मा इतनी छोटी और ज्ञान इतना बड़ा आत्मा में भर जावे। फिर मन शान्त है, बुद्धि में इतना बड़ा ज्ञान समा गया वो सब संस्कारों में चला गया, फिर कल्प-कल्प वही संस्कार चलते रहेंगे। कल्प पहले भी यह बने थे, अभी ऑटोमेटिक वो संस्कार बाबा की नॉलेज से बनते जा रहे हैं। पढ़ाई में टीचर याद जरूर

आता है कि किसने पढ़ाया है और क्या पढ़ाया है? कैसे पालना दी है? वन्दर है। जो हर आत्मा में, कोई भी भाषा वाला है, कोई भी धर्म वाला है, पहचान आ जाती है। भूल जाता है मैं कौन-से धर्म की हूँ, कौन-से देश की हूँ क्योंकि वास्तव में हम सभी का देश परमधाम है, जो बाप का घर है सो मेरा घर है। वन्दर है ना, याद है ना हमारा घर कौन-सा है? अब घर जाना है... , जब कोई शरीर छोड़ता है तो यह गीत बजाते शमशान तक ले जाते हैं। हमारी बुद्धि में भी है कि अब घर जाना है। कौन-सा घर है? जो बाप का घर है वो मेरा घर है। ऐसे बाबा को, घर में याद करो। निमित्त यहाँ शरीर में हैं फिर बाबा के साथ परमधाम घर में जाना है फिर सुखधाम में आना है, औरों को दुःखधाम से छुड़ाना है। इस दुनिया में बिचारे जो दुःखी हैं, तरस पड़ता है, अभी उनको भी पता पड़े यह घर जा रहे हैं। तो हमको घर जाना है, सबको बताना है। अभी घर जाने का टाइम है इसलिए कर्म अकर्म विकर्म की गति जो बाबा ने समझाई है, ऐसे बाबा को याद करना नहीं पड़ता है, याद स्वतः आता है। घर जाने के पहले सुख-शान्ति सम्पन्न बनना है। 16 कला सम्पूर्ण बनना है। तो यह सारा प्लान प्रैक्टिकल में जो कल्प पहले हुआ है वही बाबा बता रहा है। नई बात नहीं है, कल्प पहले भी हुआ है। ओके, ओम् शान्ति।

दादी गुल्जार - 2007

“स्वयं में शक्ति भरकर समस्या को परिवर्तन करो और समाधान स्वरूप बनीं”

कोई भी बात मुश्किल तब लगती है जब माया वार करती है। उस मुश्किल को सहज करने की विधि क्या है? मुश्किलताएँ तो आयेगी क्योंकि वायुमण्डल तो कलियुग का है ना और हमारा भी यह लास्ट जन्म है। तो लास्ट जन्म में सारा ही 63 जन्म का हिसाब-किताब चुक्तू होना ही है फिर चाहे योगबल से करो, चाहे बीमारी द्वारा करो, चाहे सहनशक्ति द्वारा करो। तब ही बाबा के साथ घर जा सकेंगे और साथ में फर्स्ट जन्म में भी आ सकेंगे।

समस्या को परिवर्तन करके समाधान स्वरूप बनाने के लिए स्वयं में शक्ति भर लो। अपने को शिवशक्ति समझेंगे तो कभी भी नरम स्वभाव, रोना, रूसना... इस प्रकार की कोमलता नहीं होगी। तो अपने को छोटी वा कुमारी या पुरुषार्थी नहीं समझना। कुमारी है तो कोमलता है। अभी तो सरेण्डर हो गई, बाबा का स्थान मिल गया, बाबा की गुरु भाई बन गई, तो अभी कर्मों की गति को ध्यान में रखते हुए बहुतकाल से तीव्र पुरुषार्थी की

स्थिति, बहुतकाल के पुरुषार्थ के विजयी की होनी चाहिए क्योंकि हम जो भी कुछ करते हैं, उसका हिसाब तो बन ही जाता है। गलती की तो दण्ड का हिसाब है।

केवल ज्ञान के प्वाइन्ट रिपीट नहीं हों, लेकिन शुद्ध संकल्पधारी समर्थी का स्वरूप प्रत्यक्ष हो। ज्ञान का मनन करके उसी में मगन हो जाओ अर्थात् भिन्न-भिन्न ज्ञान के प्वाइन्ट में मन स्थिर हो जाये। मनन करना अलग है, रिपीट करना अलग है वो भी अच्छा है। अलग-अलग टाइम पर अलग-अलग टॉपिक के प्वाइन्ट पर मनन करते मगन हो जाओ। जैसे योग की सबजेक्ट में मनन करते-करते उस रूप में चले जाओ तो सारा व्यर्थ खत्म होता जायेगा। कुछ भी करके व्यर्थ संकल्प को स्टॉप करो क्योंकि वही योग में बहुत डिस्टर्ब करता है। बाबा कहता है जो मैं जिस दिन कहता हूँ, उस ताजे माल में ताकत होती है, उसी दिन आप प्रैक्टिकल करो तो आपको हिम्मत भी मिलेगी, बाबा की मदद

भी मिलेगी। बांसी खाना खाने से तो बीमारी ही आयेगी।

मिट्टी के मटके को भी चारों तरफ देख करके लिया जाता है और मैं तुमको ऐसे ही सरेण्डर करा दूँगा? पहले करो तो सही, मरो तो सही। जीते जी मरना तो पड़ेगा ना! तो मरना पड़ेगा, सहन करना पड़ेगा, शक्ति रूप बनना पड़ेगा, यह तो करना ही होगा। तब हमारे में वो शक्ति भरेगी तब जीते जी मरना बहुत अच्छा और मीठा लगेगा। लेकिन जिसके संस्कार टक्कर होते होंगे तो कहेंगे गलती कर ली, पता नहीं किसके संग में आ गई, मर तो गई लेकिन है बड़ा मुश्किल। सरेण्डर का फाइल तो बन गया, लेकिन है बड़ा मुश्किल! अभी घर भी नहीं जा सकती, शादी भी नहीं कर सकती तो अभी क्या करें और सेन्टर पर चल भी नहीं सकती, अभी कहाँ जाऊँ... तो व्यर्थ संकल्प चलेंगे। अभी माया किस-किस रूप में व्यर्थ लाती है और किस शक्ति से उस पर विजय पा सकते हैं वो दोनों बातें अच्छी तरह से जानते तो हैं, परन्तु होता क्या है? उस समय वो याद ही नहीं आता है, समय पर शक्ति यूँज करने नहीं आती है इसके कारण बार-बार समस्यायें वा व्यर्थ संकल्प आते रहते हैं।

समझो आपके पास ईर्ष्या आई, उसको आपने जीता, तो कैसे जीता? चाहे मदद लेके जीता, चाहे योग से जीता, चाहे मनन से जीता, जीता तो सही, पास तो किया ना। फिर दूसरे बारी जब आता है तो फिर क्यों फेल हो जाते? समझते हैं यह समस्या है, पेपर है तो अभी इसमें सिर्फ सोचने समझने से कुछ नहीं होगा।

इसके लिए बाबा कहते थे जैसे तलवार को म्यान में डालके रखते हैं लेकिन अगर बीच-बीच में उसको साफ नहीं करें, यूँज नहीं करें, देखें नहीं तो जब समय आयेगा और उस समय म्यान से तलवार निकालेंगे तो उससे अपनी भी अंगुली नहीं कांट सकेंगे क्योंकि जंक खाके उसकी वो धार खत्म हो गयी। तो बार-बार मनन करो, जैसे सहनशक्ति को यूँज कैसे करें? मानो मेरे सामने ऐसे पेपर आये या फलाने ने मेरे साथ यह किया, उस समय देखो क्या करना है? तो शक्तियों को यूँज करते उसका वर्णन करते रहो। आज समाने का पेपर दूँगी, तो उस समय क्या करूँगी... ऐसे यह मनन करते रहो और यूँज करते रहो। यूँज नहीं किया तो रिवाइज करो। यह करने से क्या फायदा होता है? यह न करने से क्या नुकसान होता है, ऐसे मनन करो। तो मनन करने से वो शक्ति आपके पास हमेशा हाज़िर रहेगी। चीज़ बढ़िया हो उसको सम्भाल के रखा भी है परन्तु वो समय पर काम में नहीं आवे तो उसकी क्या वैल्यू? हमारे लिए तो वो बेकार ही हुई ना। ज्ञान सुनते-सुनते शक्तियों की परिभाषा जो आपके पास है, उसे मनन करके यूँज करो तो समय पर आपको काम में आयेगी। समय पर शक्ति इमर्ज होगी। तो यह प्रैक्टिस करो कि समय पर मेरी शक्ति काम में आती है या नहीं? तो एक सहनशक्ति को धारण करना है क्योंकि उसके बिना गति नहीं है। दूसरा समाने की शक्ति भी आपको बहुत चाहिए। अच्छा, ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

दैहिक वृत्तियों को समाप्त कर मनसा वृत्ति को भी प्युअर बनाओ

मनसा की पवित्रता कहाँ तक धारण की है? प्रकृति में चंचलता क्यों होती है? खान-पान में वृत्ति क्यों जाती है? फैशन वा कपड़ों आदि में शौक क्यों? देह-अहंकार का नशा क्यों? मन में गुस्सा उठता है क्यों? जब बाबा इशारा देते बच्चे अन्तर्मुख हो जाओ फिर भी अन्तर्मुख क्यों नहीं होते? बाबा कहते बच्चे गम्भीर हो जाओ तो भी इशारे को क्यों नहीं समझते? योग में इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं? क्यों नहीं शीतल योगी बनते? पढ़ाई में इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं?

इन सब प्रश्नों का जवाब यही है कि अन्दर की मनसा वृत्ति प्योर नहीं है। अन्दर में प्योरिटी हो तो उसकी शक्ति से यह सब बातें समाप्त हो जायेंगी। इसका अपने ऊपर अटेन्शन हो। बाहरमुखता के कारण ही वृत्ति जाती है। बाहरमुखता आने से ही संग का रंग लगता है और विकारों के वशीभूत होते हैं।

हम सब रक्षक बाप की रक्षा के नीचे बैठे हैं, इसलिए ख्याल चला कि हर एक अपने अन्दर ऐसी विल पावर क्यों नहीं रखते हैं? क्या आप पाण्डव ऐसी चैलेन्ज कर सकते हो कि हम पक्के पवित्र योगी, सर्व कर्मेन्द्रिय-जीत हैं? कोई भी देह की आकर्षण मुझे आकर्षित कर नहीं सकती?

दिखाते हैं कि जगदम्बा काली ने अपने पाँव नीचे असुर को दबाया है। यदि थोड़ी भी बुरी दृष्टि वाला है तो उसको असुर कहा जाता है। उसे एकदम पाँव नीचे दबाया, उसका नाम है शिवशक्ति।

कोई भी वृत्ति वाला क्यों नहीं आवे, उसकी वृत्तियाँ सामने आते ही बदल जायें। दुनिया इस बात को मुश्किल समझती और बाबा हमें इसी बात पर विजय प्राप्त कराते हैं।

जो बाल ब्रह्मचारी योगी हैं, वह बड़े नाज़ से कहेंगे, ऐसे

बाल ब्रह्मचारियों ने यह रिकार्ड तोड़ा है। तो अपने आपसे पूछो कि क्या हमने कम्पलीट मात्रा में इन विकारी वृत्तियों को जीता है? अगर नहीं तो क्यों? हंसी-मजाक भी क्यों?

हमारे पाण्डव पक्के योगी रहो - यह है मेरा संकल्प। एक-एक पाण्डव चमकता हुआ योगी दिखाई दे। तो खुद की सूक्ष्म चेकिंग करो कि हमारी मनसा, वाचा सूक्ष्म भी कहाँ है? अगर मनसा वृत्ति भी किसी देहधारी में जाती है तो दृढ़ता की तपस्या अग्नि में उस वृत्ति को समाप्त कर दो।

हम शूद्र जन्म से मर गये तो फिर हमारे में वह संस्कार क्यों? अभी हमारा जन्म बदल गया, संस्कार बदल गये - तब ब्राह्मण बनें। नहीं तो ब्राह्मण ही नहीं कहो। ब्राह्मण माना शीतल काया वाले योगी। जब काम की वृत्ति पूरी नहीं होती है तो गुस्सा निकलता है। दैहिक वृत्ति जाना माना पाप, तो पुण्य आत्मा कब बनेंगे? जो कम्पलीट विजयी हैं उसे ही पुण्य आत्मा कहा जायेगा। तो क्या यह सम्भव नहीं हो सकता? क्या पाण्डव ऐसे पावरफुल

बनकर विजयी नहीं हो सकते? आज से इस संस्कार का अन्तिम संस्कार कर दो। सम्भव है या नहीं? हम सब विजयी रत्न हो जाएं। साइलेन्स का ऐसा वायुमण्डल बनाओ। पवित्रता के बल से विश्व को पावन बनाने की सेवा करो। अपनी सूक्ष्म चेकिंग करो कि -

- 1) अब घड़ी तक मेरी मनसा, वाचा कितने परसेन्ट प्योर बनी है?
- 2) अगर कोई हार है तो मेरी प्रकृति के अनुकूल किस प्रकार की वीकनेस है? दृष्टि, वृत्ति, संकल्प, स्वप्न, प्रकृति चंचल....
- 3) अगर सूक्ष्म में भी विकारी भावनायें हैं तो क्या यह महसूस होता है कि यह पाप है और इसे भस्म करना जरूरी है?
- 4) मैं आज से इसे 100 प्रतिशत भस्म करता हूँ -क्या यह वायदा अपने आपसे कर सकते? या सोचते हैं कोशिश करेंगे? पुरुषार्थ करेंगे? तो अब इस प्रतिज्ञा की पक्की राखी बांधो और मनसा से भी अपवित्रता के नामनिशान को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प लो। अच्छा। ओम् शान्ति।

वरिष्ठ भाईयों की भट्टी में चली हुई वर्कशाप (कार्यशाला)

टॉपिक- रूहानियत द्वारा तपस्या का वायुमण्डल

1. इसके लिए आत्मिक स्थिति का निरन्तर अभ्यास करें।
2. सभी को आत्मिक दृष्टि से देखें।
3. वृत्ति द्वारा वायुमण्डल बनाना है।
4. वृत्ति को श्रेष्ठ बनाने के लिए शुभ भावना शुभ कामना रखना है।
5. अन्तर्मुखता के द्वारा तपस्या का वायुमण्डल बनाना है।
6. तपस्या के लिए सायलेन्स की स्थिति का अनुभव करना है।
7. अपने को रूह समझ रूहानी दुनिया में सुप्रीम रूह के समीप सम्बन्ध में रहना है।
8. रूहानी जीवन से, एकाग्रता से रूहानी वायुमण्डल बनाना है।
9. आत्मा को सात गुणों से सम्पन्न बनाना ही रूहानियत है।
10. दिव्य गुणों की खुशबू फैलाने से वायुमण्डल बनता है।
11. आज्ञाकारी, फरमानबरदार, वफादार व इमानदारी से व्यवहार करना है।
12. लम्बे समय की एकाग्रता का अभ्यास और एक बल एक भरोसा।
13. सबके साथ रूहानी भाव रख व्यवहार करें।
14. बेहद की दृष्टि रखें।
15. रूह को बार-बार देखना और उसका अनुभव दिन में बार-बार करना।
16. संगठन में रूहानियत में रहने का अभ्यास करना है।

17. साक्षी और त्याग की भावना से रूहानियत बढ़ानी है।

18. एक स्थान, एक संकल्प, एक ही समय पर बैठकर रूहानियत का अभ्यास करने से तपस्या का वायुमण्डल शक्तिशाली बन सकता है।

टॉपिक - अन्तिम समय के प्रमाण पुरुषार्थ में नवीनता और तीव्रता

1. अलौकिकता- डबल लाईट न्यारे प्यारे फरिश्तेपन का अभ्यास करें।
2. प्रतिमास - 108 घण्टे स्पेशल बैठ करके योग करें।
3. निराकारी, निरअहंकारी, निर्विकारी स्थिति का अभ्यास करें।
4. क्षमाभाव; फॉरगिव एण्ड फॉरगेट, लेट गो, पास्ट इज पास्ट करते आगे बढ़ें।
5. योगाग्नि प्रज्ज्वलित करें - एक बाप के सिवाए कोई याद न आए।
6. तुरन्त दान महापुण्य - आज का काम कल पर न छोड़ें।
7. सुनते हुए न सुनें - देखते हुए न देखें।
8. वर्तमान को ना देख अनादि स्वरूप का अभ्यास करें।
9. समस्या समाधान दिवस मास में एक दिन मनायें।
10. मास में एक दिन मौन दिवस मनायें।
11. पवित्रता-योग सप्ताह भट्टी संगठित रूप में करें।
12. हर दिन अन्तिम दिवस समझ पुरुषार्थ की प्लानिंग करें।
13. नींद में भी योग युक्त अवस्था का पुरुषार्थ करें।
14. फॉलो फादर, स्टेप पर स्टेप रखते हुए चलते रहें।